शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में नारी-अस्मिता का स्वरूप

डॉ० मुहम्मद इरफान
*हिन्दी विभाग, एम० एम० डिग्री कालेज, कटघर, मुरादाबाद, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में नारी-अस्मिता का स्वरूप

- डॉ० मुहम्मद इरफान*

नारी का अस्मिता मूलक विमर्श वर्तमान साहित्य चिंता का प्रमुख विषय है। वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारीपात्रों की मनः स्थितियों और उनकी सामाजिक भूमिका की पड़ताल प्रस्तुत शोध आलेख का केन्द्रीय विषय है।

वषय संकेतः- वृन्दावन लाल वर्मा, नारी अस्मिता, स्त्री विमर्श, हिन्दी उपन्यास

पुरुष और नारी, समाज की दो मूलभूत इकाइयाँ हैं। दोनों मिलकर सामाजिक अस्तित्व का सृजन करते हैं। पुरुष स्वर्ग है तो नारी पृथ्वी, पुरुष ताप शक्ति का रूप है तो नारी यज्ञ शक्ति का। नारी संसर्ग से ही पुरुष सभ्य बनता है। पुरुष जीवात्मा भले ही जगा ले किन्तु उसके आकार की रचना नारी के बिना सम्भव नहीं। 'नर' अथवा नर धर्म से सम्बन्धित होने के कारण ही उसे नारी कहा गया है। इसीलिए 'नारी' 'शब्द' स्वतः सम्पूर्ण अथवा निरपेक्ष सत्ता का बोध कराता है जिसमें शक्ति, सौन्दर्य, शील, कर्त्तव्य परायणता, त्याग, उत्सर्ग आदि वे सभी तत्व समाहित हो जाते हैं जिनकी ओर पुरुष आकर्षित होता है। परिवार संचालन तथा सामाजिक गतिशीलता में नारी-पुरुष दोनों की भूमिका होती है। नारी जननी, जया, प्रेमिका तथा आदर्श पत्नी के रूप में सामाजिक उत्तरदायित्वों का सफल निर्वाह करती है।

वृन्दावन लाल वर्मा ने जिस युग में लेखनी चलाई वह युग उथल-पुथल का युग था। नवजागरण तथा विभिन्न दिशाओं में प्रगति के नये आन्दोलन का युग था। भारतीय समाज पाश्चात्य सभ्यता के द्रुत परिप्रेक्ष्य में आन्दोलित हो चुका था। समाज में अंधविश्वास, कुरीतियों का बोलबाला था। समाज का सबसे हीन समझा जाने वाला वर्ग नारी था। उपेक्षित वर्ग की प्रगति एवं विकास तथा, समान अधिकार के लिए राजनीतिक जीवन के साथ साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए, जिसस शोषित वर्ग में भी चेतना के क्रान्तिकारी अंकुर प्रस्फुटित हुए। राजनीति के क्षेत्र में गाँधी जी, कांग्रेस तथा सामाजिक क्षेत्र में सुधारवादी आन्दोलनों एवं संस्थाओं द्वारा नारियों के उद्धार की कामना व्यक्त की गई। सरोजनी नायडू आदि जागृत महिलाओं द्वारा नारियों को समानाधिकार दिलाने के लिए राजनीतिक द्वार खोले गये। गाँधी जी ने कहा-'कि कांग्रेस वालों का यह खास हक है कि वह हिन्दुस्तान की नारियों को हाथ पकड़ कर ऊपर उठायें'[1] राजनीति की चकाचौंध के साथ साहित्यिक क्षेत्र में हरिऔध, मैथिली शरण गुप्त, प्रसाद, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, उग्र, चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावन लाल वर्मा आदि साहित्यकारों ने नारी की स्थिति को सुदृढ़ किया। चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों में प्रेमचन्द के समान पैनी सामाजिक मानवतावादी दृष्टि, वर्मा के समान अतीत प्रेम, जैनेन्द्र के समान मनोविश्लेषणवाद और उग्र के समान यथार्थवादिता के दर्शन होते हैं।

बदलते परिवेश का प्रभाव वर्मा जी की साहित्य साधना पर भी पड़ा। वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का मूल आधार नारी जागृति ही था। 'भुवनविक्रम', 'गढ़ कुंडार', 'विराटा की पद्मिनी, 'मृगनयनी', 'टूटे कांटे', रामगढ़ की रानी, 'अहिल्याबाई', 'झाँसी की रानी', 'महारानी दुर्गावती' आदि उपन्यास नारी जागृति के सार्थक दस्तावेज हैं। भुवन विक्रम की गोरा, हिमानी, गढ़ कुण्डार की हेमवती, तारा, मानवती, विराटा की पद्मिनी की कुमुद, कचनार की कचनार, झाँसी की रानी की लक्ष्मीबाई, झलकारी, जूही, मृगनयनी की निन्नी, लाखी, रामगढ़ की रानी अवन्तिबाई, माधव जी सिंधिया की गन्ना बेगम, महारानी दुर्गावती की दुर्गावती आदि नारियाँ अपने अस्तित्व, स्वाभिमान की रक्षा में कृत संकल्प रहती हैं।

'भुवन विक्रम' उपन्यास की हिमानी अयोध्या नरेश भुवन का रथ सामने आ जाने पर झिझकती नहीं अपितु प्रत्युत्पन्नमति के साथ भुवन को अपना परिचय देती हुई कहती है....मैं श्रीमन नीलफणिदेश की पुत्री हूँ।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० मुहम्मद इरफान
*हिन्दी विभाग, एम० एम० डिग्री कालेज, कटघर, मुरादाबाद, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

जिसका नाम यहाँ और समुद्र के पार भी प्रसिद्ध है। राजा का पुत्र होने की भुवन की धमकी से हिमानी की पूरी आंखें लाल हो जाती हैं। भौहें तन जानी हैं। नाक का एक नथना ऊपर खिंच जाता है। तारा हिमानी से अधिक जागृत, स्वाभिमानी एवं कर्त्तव्यपरायणता से युक्त है। वह भुवन से प्रेम करती है तो उसकी रक्षा करना भी अपना दायित्व समझती है। परिस्थितिवश हिमानी के यहाँ गुजर करने पर भी हिमानी द्वारा किये गये प्राणघातक हमले की कूटनीति का पर्दाफ़ाश करके प्रेमी भुवन की प्राणरक्षा करती है। राजा रोमक गोरी के साहसिक कारनामों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं...'बेटी धन्य है यह देश जहाँ तुम्हारी जैसी स्त्रियाँ जन्म लेती हैं। तुम मुझे भुवन से अधिक प्यारी हो।'[2].

'गढ़ कुण्डार' उपन्यास की हेमवती के स्वाभिमान को बरौला आक्रमण के समय नागदेव द्वारा अपने प्रति प्रकट प्रेम की अभिव्यंजना से ठेस पहुंचती है। खंगारों (एक जाति विशेष) के प्रति अपनी प्रतिक्रिया निम्न शब्दों में व्यक्त करती हैं...'यदि आप यहाँ से नहीं जाते हैं तो मैं यहां से जाती हूँ। बुंदेला कन्या न ऐसी भाषा सुन सकती है न सह सकती है और खंगार राजा होने पर भी बुन्देला, कन्या का अपमान करने की हिम्मत नहीं रख सकता।'[3]

देवरा के कारागार में दिवाकर के बंदी होने का समाचार सुनकर तारा, भाई एवं पिता द्वारा जाने का विरोध करने पर भी अपना दृढ़ निश्चय नहीं त्यागती....पिता द्वारा देवरा के कारागार तक जाने की अनुमति न दिये जाने पर तारा की आंखें चढ़ जाती हैं और कहती है...'मैं किसी से नहीं डरती। मैं जाऊंगी, यदि आप मुझे जाने से रोकेंगे तो आत्महत्या कर लूंगी।'[4]

'विराटा की पद्मिनी' की कुमुद, गोमती आदि नारियाँ नारी अस्मिता का सवाल उठाती हैं। मुट्ठी भर दागी वीरों का बलिदान, प्रणय कुंजर की आत्माहुति कुमुद के स्वाभिमानी व्यक्तित्व के सामने तिरोहित हो जाते हैं। अमिलदार्न को भयंकर तोपों की गोलाबारी से आहत होने पर प्रेमी कुंजर सिंह को विपत्ति में अकेला नहीं छोड़ती। कुंजर सिंह द्वारा अन्यत्र सुरक्षित स्थान पर जाने का प्रस्ताव भी ठुकरा देती है। गोमती नारियों की दुर्दशा के मूल में क्षत्रियों की मर्यादा का 'ह्रास होना रेखांकित करती है। दासी पुत्र रामदयाल द्वारा गोमती को अनायास रख लेने के प्रस्ताव पर गोमती की प्रतिक्रिया नारी मुक्ति का द्वार खोलती है...'यहां तो मुझे सभी दासी पुत्र दिखाई दे रहे हैं। क्षत्रियत्व की डींग मारने वालों में क्षत्रिय का कोई लक्षण बाकी है। मैं तो यह देख रही हूँ कि क्षत्रिय की डींग मारने वाले, अपने अहं की झंकार को बढ़ाने वाले पर पीड़न के सिवाय और कुछ नहीं करते।[5] क्या आप दलीप नगर की असहाय कुमारी की रक्षा का दायित्व ले सकती है।' जहाँ विराटा की कुमुद देवी गुणों के कारण जन सामान्य में पूज्य थी वहीं कचनार, दुर्गावती, लक्ष्मीबाई, लाखी आदि नारियाँ अपनी तेजस्विता, उग्र स्वभाव और कर्तव्यपरायणता के लिए विख्यात हं। वर्मा जी की नारियाँ वीर हैं, वे आत्मसम्मान की भावना हेतु परिस्थितियों के सामने विवश होने पर भी आदर्श प्रेमी का साथ नहीं छोड़ती, वे आँसू नहीं बहातीं अपितु शक्ति सामर्थ्य के अनुसार परिस्थिति का सामना करती है।

'झाँसी की रानी' उपन्यास की लक्ष्मीबाई देश प्रेम, कर्तव्यपरायणता के साथ नारी चेतना से ओत-प्रोत है। उसके व्यक्तित्व में नारी सुलभ कोमलता के साथ पुरुषार्थ, कर्मठता का समुचित रूप विद्यमान है। देश की दुर्दशा एवं नारियों की दुरावस्था का उत्तरदायित्व पुरुषों की अकर्मण्यता को मानती है।...वह पुरुषों को पुरुषार्थ का संदेश देने के लिए स्त्रियों को मलखम्भ, कुश्ती, घुड़सवारी और तेज दौड़ना भी सिखाती है। दुर्गाबाई....पीर अली के मध्य होने वाले संवादों में नारी चेतना का दिग्दर्शन देखने को मिलता है। झलकारी, रानी लक्ष्मीबाई के समान ओजस्विता से ओत-प्रोत है, जनरल रोज के सामने ले जाने पर भी डरती नहीं, घोड़े से बिना उतरे ही पूछे प्रश्नों का उत्तर देती है। जिसकी वीरता की प्रशंसा जनरल रोज भी करता है। राजा गंगाधर राव भी रानी की प्रशंसा करते नहीं अघाते। मेजर साहब से कहते हैं कि...-मेजर साहब हमारी रानी नारी जरूर है परन्तु इसमें ऐसे गुण भी हैं कि संसार के बड़े-बड़े मर्द इसके पैरों की धूल अपने माथे पर चढ़ायेंगे।' झलकारी की वीरता देखकर जनरल रोज भी कहता है...'यदि भारतीय स्त्रियों में एक प्रतिशत भी ऐसी पागल हो जाएं, जैसी यह है तो हमको हिन्दुस्तान में सबकुछ छोड़कर जाना पड़ेगा।'[6] डॉ0 शशी भूषण सिंहल ने रानी की तेजस्विता का

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में नारी-अस्मिता का स्वरूप

डॉ० मुहम्मद इरफान
*हिन्दी विभाग, एम० एम० डिग्री कालेज, कटघर, मुरादाबाद, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

बखान करते हुए लिखा है....रानी के चरित्र को लेकर जितने भी काव्य, नाटक और कथाएँ लिखी गयी हैं उन सबको प्रखर रूप से प्रस्तुत करने का श्रेय वृन्दावन लाल वर्मा को प्राप्त है।[7]

'कचनार' उपन्यास की कचनार दासी होने पर भी नारी स्वाभिमान से युक्त है। दासत्व के कारण दिलीप सिंह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है वह नारी का पूर्ण उत्तराधिकारी चाहती है। पत्नी बनकर रहने का सुझाव देती है 'मेरे साथ भांवरे डालिए, मुझे अपनी पत्नीत्व की गरिमा से प्रतिष्ठित कीजिए। मुझे वस्त्र आभूषण नहीं चाहिए।'[8] कचनार के दृढ़ स्वभाव के सामने महन्त की दृष्टि भी उदार हो जाती है। कचनार के प्रति व्यक्त किये महन्त के विचार नारी मुक्ति का द्वार खोलते हैं।...'तुम्हारे सरीखी स्त्रियाँ हमारे समाज में हो जायें तो घर-घर उजाला हो जाय।'[9]

मृगनयनी उपन्यास की लाखी को माँ की ममता से वंचित हो जाने पर प्यार मिला अटल का, जिसके साथ हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठती अपितु जंगली जानवरों से खेत की रक्षा करने के लिए निन्नी के साथ जाती है। मृगनयनी के समान लक्ष्य भेद सीखने का संकल्प दोहराना नारी अस्मिता का परिचायक है। 'जब गूजर कन्या सीख सकती है तो अहीर कन्या क्या किसी से कम है. 'मैं बहुत जल्दी सीखूंगी सीखने पर ग्वालियर के राजा के सामने लक्ष्य भेद करके दिखाऊंगी'। विपत्तियों से घिरी होने पर अटल का साथ नहीं छोड़ती विवाहिता पत्नी बनकर रहना चाहती है। रखैल बनकर रहने से राई नदी में पत्थर बांध कर डूब मरना अच्छा समझती है। ग्वालियर छोड़ने से पूर्व कुछ करतब दिखाना चाहती है। जब गाँव में निन्दाचार को सुनती है तो उसका स्वाभिमान के साथ सामना करती है- 'कोई मुझको यदि किसी की चेरी कहे, चाहे वह मेरी ननद ही क्यों न हो, मैं तो नहीं सह सकूंगी और न यह सह सकूंगी कि कोई तुमको राजा का रोटियारा दास कहे'[10]

विलासिता के वातावरण में जीवन यापन करने वाली निन्नी भी पुरुषों की कामुकता पर कठोर व्यंग कसती है। चाहे राजा मान सिंह ही क्यों न हों वह प्रेम से पूर्व कर्त्तव्य पर जोर देती है। जौहर करने वाली स्त्रियों को निकम्मा बताती हैं। अपने ऊपर आंख डालने वाले पुरुष को धूल चटाने की सामर्थ्य भी रखती है।

वृन्दावन लाल वर्मा ने नारी के प्रति व्यक्त सहानुभूति के मूल में अपना मत व्यक्त करते हुए लिखा है.. .क्यों न करता? जिस नारी के लिए 'मनु-स्मृति' में लिखा गया है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। उसकी व्यापक दुर्दशा को देखकर ऐसी स्त्रियों के जीवन का अनुभव रखते हुए कि उन्होंने देश, समाज, परिवार को कठिन परिस्थितियों से बचाया है। क्यों न अधिक स्थान देता? एक ओर जिन्होंने स्त्री के स्त्रीत्व को सराहा दूसरी ओर उनके सौन्दर्य को रस सागर में डुबोने को प्रक्रिया की है उन्होंने मेरे मन में प्रतिक्रिया व्यक्त की है जिन स्त्रियों की शक्ति को आंखों से देखा व कानों से सुना मैंने उन्हें अपनी भावना भेंट की है।[11]

'अहिल्याबाई' उपन्यास की रानी अहिल्याबाई, मल्हार रूकमाबाई के मध्य हुए विवाद को अपनी बुद्धि चातुर्य से निबटाती है और मल्हार द्वारा माँ को चोर कहे जाने पर रानी अहिल्याबाई का स्वाभिमान जागृत हो उठता है...'एक घूसे में धूल चटा दूंगी संभल कर चलो। बहुत सिर उठाकर चलना अच्छा नहीं है, नहीं तो सिर कुचल दिया जायेगा।' आनन्दी का विवाह बट्टू सिंह के साथ निश्चित होने पर दुर्भाग्य से बट्टू सिंह अदृश्य हो जाता है। जिसकी अनुपस्थिति मुखिया की वासना को जागृत करती है, आनन्दी को अपने चंगुल में फंसाना चाहती है, जबकि आनन्दी मुखिया की इसी कुप्रवृत्ति का मद्देनजर रखते हुए अपनी मुक्ति एवं तेजस्विता का आह्वान निम्न शब्दों में करती है...'मैं भूखे या कायर के साथ अपना जन्म और मान नहीं गवाउंगी, भवानी की कृपा से रुपया इकठ्ठा करूँगी और बेईमानों को मज़ा चखाउंगी जो मेरे हाथ-पैर जोड़े उसी के साथ विवाह करूंगी।'[12]

'रामगढ़ की रानी' उपन्यास की रानी अवन्तिबाई कृषक अधिकारी के बीच होने वाले विवाद को सुनकर कर्मचारियों को डांटती है और स्वयं को चुनौती दिये जाने पर रानी कर्मचारी के मुंह पर थप्पड़ जमा देती है...'कह देना अपने बाप अफसर से कि मैं तुम सरीखे लुच्चे लफंगों को यहाँ नहीं फटकने दूंगी।'[13]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में नारी-अस्मिता का स्वरूप

डॉ० मुहम्मद इरफान
*हिन्दी विभाग, एम० एम० डिग्री कालेज, कटघर, मुरादाबाद, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

'महारानी दुर्गावती' उपन्यास की नायिका दुर्गावती पति, पुत्र की अनुपस्थिति में कर्त्तव्य परायण भाव से शासन की बागडोर संभालती है। अकबर द्वारा भेजे गये प्रस्ताव का तीव्र गति से विरोध करती है....'स्त्री होने पर भी मैं तुम सरीखे पुरुषों की अपेक्षा राजपद धारण करने के अधिक योग्य हूँ। सफेद हाथी तो क्या उसका सफेद बाल भी भेंट नहीं किया जा सकता। अकबर तुम राज्य करने के योग्य नहीं हो। तुम तो सीजन में रूई धुना करो।[14] वृन्दावन लाल वर्मा के पुरुष पात्र भी नारी की अस्मिता पर आँच नहीं आने देते हैं। 'टूटे कांटे' उपन्यास का सिपाही मोहन, पत्नी रोनी के कर्कश व्यवहार से दुखी होने पर भी कभी हाथ उठाना अच्छा नहीं समझता, कभी गिरी नज़रों से नहीं देखता, अपितु मथुरा में पुनः मिलने पर सहर्ष अपना लेता है। विपत्तियों के बोझ से दबी नूराबाई की रक्षा करना अपना मूल कर्त्तव्य समझता है। मुगल सम्राट शहाबुद्दीन के हरम से नूराबाई को मुक्त करने के बदले नूराबाई द्वारा दिये इनाम को ठुकरा देता है।...'मुझको इनाम नहीं चाहिए स्त्रियों की जान-माल या मर्यादा के बदले हम इनाम नहीं लेते।' वृन्दावनलाल वर्मा की नारियाँ जिससे प्रेम करतीं हैं उसका जीवनपर्यन्त साथ भी निभाती हैं, मोहन को नूराबाई के प्रति आकर्षित होता देख, रोनी में पत्नीत्व का भाव जाग्रत हो जाता है। नूराबाई को फटकारती हुई कहती है ..... यह हमारा मालिक है तू कौन है, कहाँ की है, कहाँ से आई है[15] रोनी को सौतन की अपेक्षा दुख उठाना स्वीकार है।

निष्कर्षः-

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों की चित्रशाला में हमारा सबसे अधिक ध्यान नारी पात्र आकर्षित करते हैं। तारा, मानवती, कुमुद, लाखी, गन्ना बेगम, मृगनयनी, नूराबाई, महारानी दुर्गावती आदि नारियों के व्यक्तित्व में कार्यशीलता, भावुकता के साथ साहस, त्याग, शक्ति और बलिदान का पुट देखने को मिलता है। दरिद्र की निधि के समान वर्मा की नारियाँ हृदय में उठते प्रेम सागर को हृदय के गुप्ततम कोने में छिपाकर रखती हैं। वर्मा की दृष्टि में नारी परिवार की नींव है, जिस पर समुदाय, राष्ट्र का भवन निर्मित होता है। मानव सभ्यता का भविष्य नारी की सहयोगिता पर आश्रित होता है।

वृन्दावन लाल वर्मा की स्त्रियाँ वीर हैं। उनमें आत्मसम्मान की भावना हेतु परिस्थितियों के सामने विवश होते हुए भी आदर्श प्रेम को पुष्ट करने की निर्भीकता भी है। उनकी नारियाँ भले ही एक तीर से आतताइयों का खात्मा कर दें, उन्मुक्त विचरण करते हिरणों का शिकार कर लें किन्तु अपने आत्म सम्मान की भावना हेतु निर्धारित लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन नहीं करती। वृन्दावन लाल वर्मा की दृढ़ इच्छा शक्ति का अनुमान इन शब्दों में लगाया जा सकता है-'हिन्दी के लिए, देश के लिए, अभी कुछ नहीं कर पाया, बच गया तो अवश्य करूँगा।' वर्मा जी ने जैसा सोचा उसे कर दिखाया उनकी साहित्यिक उपलब्धि को लेकर उन्हें 'बुन्देलखण्ड का गौरव' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि उनकी नारियों ने न केवल बुन्देलखण्ड का, अपितु समस्त भारत की नारियों के लिए स्वाभिमान का मार्ग प्रशस्त किया है।

संदर्भ सूचीः-

1. साहित्य संदेश, सं0 महेन्द्र, साहित्य रत्नभंडार आगरा, प्रथम संस्करण 1955, पृष्ठ 355 ।
2. वर्मा, वृन्दावनलाल, भुवन विक्रम, मयूर प्रकाशन झाँसी, प्रथम संस्करण 1959, पृष्ठ 355 ।
3. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम खंड, प्रथम सं0-1991, पृष्ठ 147।
4. वही, पृष्ठ 212 ।
5. वर्मा, वृन्दावनलाल, विराटा की पद्मिनी, मयूर प्रकाशन, झाँसी, प्रथम संस्करण 1959, पृष्ठ 330 ।
6. मोहरा, डॉ0 भगवानदास, 1857 के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, प्रथम संस्करण, 1976, पृष्ठ 330 ।
7. सिंहल, शशिभूषण, कथाकार वृन्दावन लाल वर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 1993, पृष्ठ 79 ।
8. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद, वृन्दावन लाल वर्मा समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम सं0-1994, पृष्ठ 17 ।
9. वही
10. वही
11. राय, गोपाल, हिन्दी अनुशीलन, भारतीय हिन्दी परिषद इलाहाबाद, संयुक्त अंक 4, दिसम्बर जनवरी 1986, पृष्ठ 36 ।

SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में नारी-अस्मिता का स्वरूप

डॉ० मुहम्मद इरफान
*हिन्दी विभाग, एम० एम० डिग्री कालेज, कटघर, मुरादाबाद, उ०प्र०

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

12. वर्मा, वृन्दावनलाल, अहिल्याबाई, मयूर प्रकाशन झाँसी', छठा संस्करण 1959, पृष्ठ 112 ।
13. वर्मा, वृन्दावनलाल, रामगढ़ की रानी, मयूर प्रकाशन, झाँसी, चतुर्थ संस्करण, 1961, पृष्ठ 73 ।
14. वर्मा, वृन्दावनलाल, महारानी दुर्गावती, मयूर प्रकाशन, झाँसी, प्रथम संस्करण 1961, पृष्ठ 244 ।
15 वर्मा, वृन्दावनलाल, टूटे कांट, मयूर प्रकाशन, झाँसी, प्रथम संस्करण, 1993, पृष्ठ 232 ।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN